मुस्लिम महिला से सवाल

पिछले दो हफ़्तों से मैं इस्लामी आतंकवाद पर लगातार लिख रहा था. मेरा मानना है की जब तक आतंकवाद की जड़ पर प्रहार नहीं किया जाएगा कोई लाभ नहीं होगा इसलिए मैं कुरआन और मुहम्मद के बारे में तीन चार लेख लिखे थे. जैसे लेख प्रकाशित हुए मेरे पास तरह तरह की टिप्पणियों की भरमार हो गयी. कुछ लोगों ने मुझे देश की गंगा-जमुनी तहजीब की दुहाई देकर भाईचारा बनाए रखने की अपील की. चूंकि मैं ने भी अरबी फारसी उर्दू के साथ इस्लामी इतिहास का आद्यां किया है. इसलिए मैं जानता हूँ की यह हिन्दू मुस्लिम एकता की बातें कितनी खोखली हैं, मुसलमान अपना स्वभाव नही छोड़ सकते.

शेख साड़ी ने कहा है -

गुर्ग जादा हमेशा गुर्ग शवद

गरचे बा आदमी बुजुर्गशवद

यानी भेड़िये का बच्चा भेड़िया ही होता है, चाहे वह आदमियों के साथ रह कर बुड्ढा हो जाए |

इसके अलावा कुछ मुस्लिम ब्लॉगर ने इस्लाम की महानता जताने के लिए कुछ बजरंग दल और शिव सेना के ऐसे लोगों के फर्जी बयान अपने ब्लॉग से मुझे लिंक किये, जिसमे इन नए मुसलमानों ने खुदा का शुक्रिया करते कहा की, आज मुझे अक्ल मिल गयी, और में मुसलमान हो गया. वरना में अँधेरे में भटकता रहता. इन लोगों कुछ मौलवियों के सामने यह भी वादा किया वे अब कुरआन और रसूल के बताये रास्ते पर चलेंगे. और गुमराही का रास्ता छोड़ देंगे. इन लोगों से यह भी कहलवाया गया किसिर्फ इस्लाम ही सच्चा धर्म है.

मेरा ऐसे मूर्खों से कहना है कि जिस की बुद्धी पर पत्थर पड़ जाते है सिर्फ वही मुसलमान बनाता है.

सूफी फकीर, जिनका मजार दिल्ली की जामा मस्जिद के सामने है, एक बार कहा था -

सूए मस्जिद की रवम इम्मा मुसलामा नीस्तम

बुत परस्तम काफिरम अज अहले इमां नीस्तम

यानी मैं मस्जिद क्यों जाऊं, मैं तो काफिर हो गया हूँ और मूर्ति पूजक होगया, मै अब ईमान वाला नहीं रहा.

इसके बाद मैं, उन मुस्लिम महिला ब्लॉगर से एक सवाल पूछना चाहता, जो इस्लाम और मुहम्मद की तारीफों में जमीन आसमान एक कर रहीं हैं, यदि उन्हें भी मुहम्मद जैसा पति मिल जाए जिसकी पाहिले से ही एक दर्जन पत्नियां हों, जो उनके ही बिस्तर पर उनके ही सामने कई औरतों और दासिओं से सम्भोग करता हो और जब वह सम्भोग कर रहा हो तो, खुद अल्लाह एक रेफरी की तरह उसे कुरआन की आयातों के जरिये उसे गाईड करते हों.

धन्य हैं ऐसे नबी और धन्य उनके मानने वाले.

घटिया से घटिया वेश्या भी एक बार में बिस्तर पर एक ही ग्राहक बुलाती है और पर्दा डाल देती है लेकिन मुहम्मद तो नबी है अल्लाह ने उनको छूट जो दे रखी है. वे कुछ भी करें. बताइये है किसी मुस्लिम लड़की में इतनी हिम्मत है ?